संपादक की कलम से.....

शब्दों की आजादी

राम अवतार बैरवा

देश को आजाद हुए आज 79 वर्ष बीत चुके हैं। किसी भी देश के लिए इतना समय खुद को गढ़ने और बढ़ने के लिए बहुत पर्याप्त है । हमने सूई से लेकर हवाईजहाज तक हर क्षेत्र में खुद को साबित किया है। कई क्षेत्र ऐसे भी हैं, जहां मुकाबले में हमारे सामने कोई नहीं। जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में अव्वल हो चुके देश में प्रजातंत्र का सुचारू और व्यवस्थित चलना हमारी उपलब्धि नहीं, चमत्कार है। इतनी विविधता, इतनी भाषाएं, इतने वर्ग, इतने वर्ण, इतनी जातियां, इतने धर्म, इतनी संस्कृति और इतनी मान्यताएं और इतने करोड़ देवी–देवता, न कहीं हैं और न हो सकते हैं। फिर भी हर आपत्ति में एकजुट रहना हमारी अटूट और सभ्य संस्कृति को दर्शाता है। हर तीज–त्योहार पर मिठाइयों के आपसी आदान–प्रदान में हमारी गंगा–जमुनी संस्कृति झलकती है। कभी–कभार किसी बात पर हम आपस में रूठ भी जाते हैं पर बच्चों की तरह जल्द ही मान भी जाते हैं।

अस्सी साल की दहलीज पर खड़े भारत में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति शेष हो, जो आजादी से पहले और आजादी के समय की उस पावन स्मृति को बयां कर सकता हो । हमने जो पढ़ा है, वो तो बहुत चौंकाने वाला है। उस समय की हवा और धूप तक में हमारी एकता और अखंडता के शब्द तैरते मिल जाया करते थे । कन्याकुमारी के लोगों के पांव में चुभे कांटे का दर्द कश्मीर में महसूस किया जाता था।

आजादी से पहले और आजादी के बाद बहुत से विषयों पर जन, जननायकों और नेताओं के बीच मतभेद हुए, आन्दोलन भी हुए। सरकारों की आलोचना भी खूब हुई। जनता सड़कों पर भी आई, नारे भी रचे और बुने गए । उन नारों में हमारा इतिहास, हमारी संस्कृति, हमारी परम्पराएं और हमारा साहित्य झलकता था । दुष्यंत कुमार की ग़ज़लें तो जैसे नारे ही बनकर रह गई। दिनकर की एक कविता तो बनी ही सरकारों को हिलाने के लिए है –'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।' हजारों लोगों में क्या किसी को इन कवियों और कविताओं के बारे में नहीं पता ? क्यों इस पीढ़ी के अभिभावकों और अध्यापकों ने इनको बेहतर संस्कार नहीं दिए ? अपशब्द गुस्से के मूल जनक होते हैं। गुस्सा एक पल के लिए आता है और पल में सबकुछ तबाह करके चला जाता है और कविता बहुत देर बाद आती है और युगों तक प्रभाव डालती है। एक में शब्द स्थूल से सूक्ष्म की यात्रा करते हैं, दूसरे में इसके बिल्कुल विपरीत। माना जमाना सोशल मीडिया और युवाओं का है मगर इन दोनों को ही हमारा इतिहास और संस्कृति सदा स्मृत रखनी होगी। यही हमारी ताकत है और यही हमारी पहचान है।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हमारा अधिकार हो सकता है मगर मर्यादा, नैतिकता और सभ्यता हमारा दायित्व भी है। अगर ये पीढ़ी ही ऐसा करेगी तो सोचिए अगली पीढ़ी कहां जाकर ठहरेगी ? जब हम देश की आजादी को सौ साल मना रहे होंगे तब इस पीढ़ी के जूते आने वाली पीढ़ी के पांव में आ चुके होंगे। हमें याद है हमारे दादाजी के आगे पिताजी के शब्द जुबां से बाहर नहीं आते थे । पिताजी के आगे हम अपनी बात रख भर सकते थे , निर्णय पर हमारा अधिकार नहीं था मगर हमारे बच्चे अपना निर्णय खुद ले रहे हैं । अब ये पीढ़ी खुद सोचे कि उनके बच्चों के शब्द कहाँ जाकर रुकेंगे और वे कितने आजाद होंगे ?